B.A I (Hons) 31.7.20

I paper (भारतीय दर्शन)

वैशेषिक दर्शन - पदार्थों के प्रकार

(1) विशेष — यह वैशेषिक दर्शन का पाँचवाँ पदार्थ है। इसका नामकरण स्वतंत्र पदार्थ मानने से हुआ है। विशेष का अर्थ होता है व्यावर्तक। यह सामान्य के ठीक विपरीत है। दिक्, काल, आत्मा, मन, पृथ्वी, वायु, जल और अग्नि के परमाणुओं की विशिष्टता की व्याख्या के लिए विशेष को अपनाया जाता है जो द्रव्य निरवयव है। अतः इन द्रव्यों को एक दूसरे से अलग करना कठिन जान पड़ता है। वैशेषिक अनेक तत्ववादी है। विशेष वह नित्य पदार्थ है जिसके कारण कि नित्य द्रव्य अन्य नित्य द्रव्य से अपने को पृथक करता है। वैशेषिक दर्शन में विशेष की एक स्वतंत्र सत्ता मानी गयी है। विशेष नित्य, असंख्य, अदृश्य है। परमाणु की भाँति विशेष अप्रत्यक्ष है। वैशेषिक दर्शन में विशेष की अत्यधिक महत्ता है इसका नामकरण एक स्वतंत्र पदार्थ मानने के कारण हुआ है।

न्याय-नाम तथा वेदान्त दर्शन विशेष को स्वतंत्र पदार्थ के रूप में नहीं मानता।

(2) समवाय — दो द्रव्यों के अलग न होने वाले अविच्छिन्न सम्बन्ध अयुतसिद्ध कहलाता है ऐसी वस्तुएँ जिनका अस्तित्व पृथक नहीं रह सकता है वे सभी अयुतसिद्ध है।

अभाव — वैशेषिक दर्शन अभाव का उल्लेख प्रमेय के रूप में करता है। अभाव एक ऐसा पदार्थ है जिसका रूप भावात्मक नहीं अभावात्मक निषेधात्मक ही रहता है परन्तु उसके अस्तित्व पर संदेह नहीं किया जा सकता है।

वैशेषिक दर्शन में छः पदार्थ भाव पदार्थ हैं जबकि अंत पदार्थ अभावात्मक है। अभाव किसी वस्तु का न होना कहा जाता है। अभाव शून्य से भिन्न है। प्रो० हिरियन्ना ने कहा है कि "अभाव से हमें किसी विशेष स्थान और समय में किसी वस्तु की अनुपस्थिति समझनी चाहिए। अभाव का अर्थ शून्य नहीं है जिसे न्याय वैशेषिक एक विचार शून्य या मिथ्या कल्पना कहकर उपेक्षा करता है।

वैशेषिक में अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना जाता है। अभाव दो प्रकार के होते हैं।
(1) संसर्गाभाव (2) अन्योन्याभाव।
दो वस्तुओं के सम्बन्ध के अभाव को संसर्गाभाव कहा जाता है जैसे आग में शीतलता का अभाव। संसर्गाभाव चार प्रकार के होते हैं। (i) प्रागभाव (ii) ध्वंसाभाव (iii) अत्यन्ताभाव (iv) सामयिक अभाव।
(i) प्रागभाव – निर्माण के पूर्व किसी वस्तु का अभाव रहना प्रागभाव है। एक कुम्हार मिट्टी के द्वारा से घड़े का निर्माण करता है। घड़ा बनने के पहले मिट्टी में घड़े का अभाव रहता है इसे प्रागभाव

कहते है

(2) ध्वंसाभाव – इस तरह का अभाव नष्ट होने के बाद पैदा होता है जैसे, घड़े नष्ट होने के बाद टूटे हुए टुकड़े में घड़े का जो अभाव होता है वही ध्वंसाभाव कहलाता है। ध्वंसाभाव का कभी अन्त नहीं होता है क्योंकि जो घड़ा टूट चुका है उसकी उत्पत्ति कभी नहीं होगी इसलिए ध्वंसाभाव को आदि और अनन्त कहा जाता है

(3) अत्यन्ताभाव – दो वस्तुओं में भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल के संबंध के अभाव को अत्यन्ताभाव कहा जाता है। जैसे वायु में रूप का अभाव

अन्योन्याभाव — इसका शाब्दिक अर्थ है दो वस्तुओं की भिन्नता। जब एक वस्तु दूसरे से भिन्न होती है तो उसका अर्थ है पहली वस्तु का दूसरी वस्तु के रूप में अभाव जैसे गाय अश्व नहीं है, अश्व गाय नहीं है। यह अभाव अनादि और अनन्त है।

अतः हम कह सकते है कि वैशेषिक दर्शन में सातवें पदार्थ के रूप में अभाव पदार्थ को स्वतंत्र पदार्थ के रूप में स्वीकार किया गया है